वीर नम द द णुजरात व   व ,सूरत

तृतीय वष बी.ए.

हंद

सेमे टर-5

Parishist-3

(2013-2014 एवम् 2014-2015 के शै   क वष के लिए)

प11 आ दएवम् म ययुगीन क वता   Core Course-09

तावनाः हंद का आ दकालीन सा ह य ारवत काल को भा वत करने म स   य स म भूमिका रह है। इस काल के अ ययन के बना कसी भी काल का वा त वक मू यांकन संभव नह है। भ   काल क का य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन वर लेकर आया। इसने भारत क भावना मक एकता और सां कृतिक परंपरा को सुर   त रखा है। अतः इनका अ ययन समाज, सं कृति और युग को समझने के लिए अनिवाय है।

1. व ापति क पदावलियाँ

2.मलिक मुह मद जायसी ‘प ावत’ का ‘नागमती वयोग ख ड

पा यपु तक **ाचीन और म यकालीन हंद का य संपा.डॉ.वीरे   नारायण सिंह**

(काशक ुमिल काशन, अहमदाबाद)

अ ययन के लिए निधा रत ब ्-

ईकाई-1 निगु ण भ   धारा क ला   णकताएँ।

मैथिल को कल व ापति का सा ह य क रचय।

ईकाई-2   व ापति क पदावलिय म व ण स दय चि ण

 व ापति: वलास और यौवन के क व

 व ापति का ृँगार चि ण

ईकाई-3 ‘प ावत’ क कथाव तु

‘प ावत’ म नागमती का वरह वण न

ईकाई-4   व ापति क गीति-योजना

 व ापति क भ   -भावना

 व ापति का कृ -चि ण

‘नागमती वयोग ख ड’ म प ावती को संदेश।

‘नागमती वयोग ख ड’ म कृति चि ण

जायसी क भाषा।

अंक- वभाजन

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 1 और 4 से ट प णी (चार वक प म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 1 और 4 से सं   (दस वक प म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत्क्र वताओंसे 14 वैक पक (हरेक के चार वक देिये ने ह गे।)14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक-

1.भ का क्यासमाजशा - `मशंकर

2.भ का क्यभूमिका- `मशंकर

3.भारतीय `मा याका य्यडॉ.ह रकांत ीवा तव

4.जायसी का प ावतडॉ.गो व द गुणायत

5. व ापति का यसाधना-डॉ.देशराजसिंह भाट , हंदसा ह संसार, द ली

6. हंद सा ह य क वृ -ड्याँजय कशन साद ख डेलवाल

7. हंद सा ह य का इतिहास-रामचं शु ल

8. हंद सा ह य का आ दकालहजार साद वेद

9. हंद सा ह य का इतिहास. डॉ.नगे

अथवा

प11 म ययुगीनक्र वता Core Course-09

तावनाः हंद का आ दकालीनसा ह यारवत काल को भा वतकरने म स य स म भूमिका रह है। इस काल के अ ययनके बना कसीभी काल का वा त वकमू यांकनसंभव नह है। भ कालका का यलोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन वर लेकर आया। इसने भारत क भावना मकएकता और सां कृतिक परंपरा को सुर सखा है। अतः इनका अ ययनसमाज, सं कृतिऔर युग को समझने के लिए अनिवाय है।

1.सूरदास के पद

2.मीराँबाईक पदावली

पा यपु तक **ाचीनऔर म यकालीन हंदका यसंपा.डॉ.वीरे नारायणसिंह**

(काशक ुमिल काशन, अहमदाबाद)

अ ययनके लिए निधा रत`-

ईकाई-1 सगुण भ -धारा क मुख वशेषताएँ।

भ कालहंदसा ह य का सुवण युग।

ईकाई-2 सूर क भ -भावना।

सूर का वा स य-वणन।

सूर के पद म अभि य वरह्वेदना।

ईकाई-3 मीराँ क भ -भावना

मीराँ के पद म अभि य ृंगार

ईकाई-4 यशोदा का वा स य

सूर क राधा।

सूर क भाषा

सूरदास के पद म गीति-योजना
मीराँ का कृ ण।
मीराँ के पद म गीता मकता।
मीराँ क पदावलिय म अभि य रस।

अंक- वभाजन

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)
ईकाई 1 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)
ईकाई 1 और 4 से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)
प ठत क वताओं से 14 वैक पक (हरेक के चार वक दे ह गे।(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1.मीराँबाई क पदावली-परशुराम चतुव द
2.मीराँ क भ और उनक का यसाधना का अनुशीलन- भगवानदास तिवार
3.भ और र तिकालीन हदमु क का य जते पाठक
4.सूरदास-हरवंसलाल शमा
5.सूर-सा ह य-आचाय हजार साद वेद
6.महाक व सूरदास-नंददुलारे वाजपेयी
7. हंदसा ह य क वृ -ज याँ जय कशन साद ख डेलवाल
8. हंदसा ह य का इतिहास-रामचं शु ल
9. हंदसा ह य का इतिहास. डॉ.नगे

+++++

प12 ग - वधाएँ **Core Course-10**

तावना आधुनिक काल म ग सा ह य के व वध प का वकास इस बात का सा है क ौढ मन क पूण अभि य ग ह म संभव है। निबंध, नाटक, उप यास, कहानी तथा अ य व वध वधाओं के प म ग सा ह य का वकास तेजी से हुआ है। मनु य को उसक कृ ति प रवेश प र थ तिया चिंतन क वकास के साथ मा णक प म ग के मा यम से ह जाना जा सकता है। अतः इसका अ ययन अनिवाय है।

पा यपु तक: **ग धारा-डॉ.ल लन राय**
(कोणाक काशन द ल्ली1)

अ ययन के लिए निधा रत`-

ईकाई-1 क वयक उमि ला वषयक उदासीनता : महावीर साद वेद
महाजनी स यता `मचंद
ईकाई-2 राजनीति का बँटवारा : ह रशंकर परसाई
सुभान खाँ : रामवृ बेनीपुर
ईकाई-3 वशि और अ तीर मु बोध
'बम' का सहारा: ववेक राय

ईकाई-4 मेघदूत क पु तकसमी ा शरद जोशी

व ाथीऔर राजनीति : जवाहरलाल नेह

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 3 और 4 से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत वधाओंसे 14 वैक पक (हरेक के चार वक दयेजाने ह गे।) (14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. हंद निबंध-गो व द लालछाबडा
2.ह रशंकरपरसाईः यं य क वैचा रकपृ भूमि-राधेमोहन शमा
3. हंद का आधुनिक या -सा ह -डॉ. तापपालशमा
4.ह रशंकरपरसाई के यं य म वग-चेतना-डॉ.आभा भ ट
5. ीरामवृ बेनीपुर -डॉ.राम वलासशमा
6. ेमचंदःएक ववेचन-डॉ.इ नाथमदान, राजकमल काशन .लि., नई द ली

अथवा

प12 ग - वधाएँ Core Course-10

तावना:आधुनिक काल म ग सा ह यके व वध पका वकासइस बात का सा ी है क ौढ मन क पूण अभि य ग ह म संभव है। निबंध, नाटक, उप यास,कहानी तथा अ य व वध वधाओंके प म ग सा ह यका वकासतेजी से हुआ है। मनु यको उसक कृति,प रवेश,प र थ तयांतथा चिंतन क वकास के साथ ामा णक प म ग के मा यमसे ह जाना जा सकता है। अतः इसका अ ययन अनिवाय है।

पा यपु तकः **निकष -रामरतन भटनागर**

(सा ह भवन .लि., इलाहाबाद)

अ ययनके लिए निधा रत ेे-

ईकाई-1 उ साह- आचाय रामचं शु ल

सुँघनी साहु- जयशंकर साद

ईकाई-2 चिरता क साधना- आचाय वनोबाभावे

देशभ - पा डेयबेचन शमा 'उ '

ईकाई-3 ह रकण- रायकृ णदास

माझुली- 'अ ेय'

ईकाई-4 टलाइफ- फणी नाथ 'रेणु'

कैजुएल लीव- जमीला कुरैशी

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 3 और 4 से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत वघाओं से 14 वैक पक (हरेक के चार वक ह गे।) (14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. हंद निबंध-गो व द लाल छाबडा

2.आचाय रामचं शु लः निबंध संरचना और का यचितन-डॉ.योगे तापसिंह

3. हंद का आधुनिक या -सा ह -डॉ. तापपाल शमा

4. हंद निबंध सा ह य का सां कृतिक अ ययन-डॉ.बाबूराम

5.अ `य:एक अ ययन-डॉ.भोलाभाई पटेल

6.अ `य:सृजन और संघष-राजकमल राय, लोकभारती काशन, इलाहाबाद

7.कथाकार फणी रनाथ रेणु-डॉ.चं भानु सोनवणे, पंचशील काशन, जयपुर

8. `मचंद:एक ववेचन-डॉ.इ नाथ मदान, राजकमल काशन .लि., नई द ली

+++++

प13 भारतीय का यशा Elective Course-04

तावना कसीभी रचना क वशि ता एवम् मू यबोधके उ ाटनके लिए का यशा और सा ह यालोचन का ान अनिवाय है। इनसे ह सा ह य क समझ वकसित हो सकती है। इससे ह वह मिलती है जसके आधार पर सा ह य के मम और मू यक परख हो सकती है। सामा जक सां कृतिक भारतीय लिए के समझने म सम ता उसक को रचना तथा करने आ वादका रचना साथ के प रवेश है। आव यक अ ययन का का यशा

अ ययन के लिए निधा रत `-

ईकाई-1 अ.का य ल ण, का य हेतु, का य योजन, का य के कार

आ.श द श , का य गुण, का य दोष

ईकाई-2 रस, अलंकार, र ति, व नि और व ो सि ांत का सामा य प रचय

ईकाई-3 नि नलि खत का यालंकार ल ण और उदाहरण-

उपमा, उ `, ा पक, वभावना, वशेषण वपय य, मानवीकरण, ष, यमक, अनु ास और व ो ।

ईकाई-4 नि नलि खत छंद के ल ण एवम् उदाहरण-

दोहा, रोला, सवैया, छ पय, घना र, इं व , मंदा ांता, वसंततिलका, शिख रणी और शादू ल व डत।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 3 और 4 से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)

सभी ईकाईय से 14 वैक पक (हरेक के चार वक ह गे।) (14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक1. हं आलोचना क बीसवीं सद -निम लजैन

2. रस-चितन के व वआयाम-सं.आनंद काशद त

3. भारतीय तथा पा ा य यशा तथा हं आलोचना-डॉ.रामचं तिवार

4. भारतीय का यशा क भूमिका-डॉ.नगे

5. रस-सि ांत-डॉ.नगे

6. भारतीय एवम् पा ा य यसि ांत-डॉ.गणपतिचं गु

+++++

प14 ादेशिकसा ह य Elective Course-05

तावनाभारतीय भाषाओं म हंदसव प है। इसलिए हंदसा ह या यनको अधिक गंभीर बनाना ज र है। भारतीय सा ह य प रचना के लिए हंदका भारतीय संदभ सवथा ासंगिकहै। इस से छा के लिए भारतीय भाषाओं के सा ह यका ानअनिवाय है। इससे उनके ानएवम् सां कृतिक म अभिवृ होगी।

पा यपु तक**मानवीनी भवाई –प नालालपटेल**

अ ययनके लिए निधा रत`-

ईकाई-1प नालालपटेल का सा ह यकप रचय

गुजराती जानपद (आँचलिक) उप यास का वकासः सामा य प रचय

'मानवीनी भवाई' का कथानक-मू यांकन

'मानवीनी भवाई' एक आँचलिक उप यासके पम ।

ईकाई-2 'मानवीनी भवाई' के मु यपा -काळु एवम् राजु

ईकाई-3 'मानवीनी भवाई' उप यासक संवाद-योजना

'मानवीनी भवाई' के परथमीनो पोठ अ यायम वातावरण-योजना

'मानवीनी भवाई' म अकाल-वण न कृतिचि ण

ईकाई-4 'मानवीनी भवाई' म प नालालपटेल क वण नशैली

'मानवीनी भवाई' का उ ` य

'मानवीनी भवाई' शीष कक साथ कता।

'मानवीनी भवाई' का अंत।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक प म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 3 और 4 से सं (दस वक प म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठतउप याससे 14 वैक पक (हरेक के चार वक प देने ह गे।

(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1.अवा चीन गुजराती सा ह य नो इतिहास-३-४ (सा ह य प रषद काशन)
2.अवा चीन गुजराती सा ह य नी वकासरेखा-१-२ -डॉ.धी भाई ठाकर
3.गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधर -राधे याम शर्मा
4.गुजराती नवलथामां पा नि पण२ - डॉ.रमेश दवे
5.गुजराती सा ह य नो इतिहास- रमेश वेद
6.अवा चीन गुजराती सा ह य नो इतिहास-रमेश वेद
7.प नालालनुं दा रघुवीर चौघर -रमेश दवे, काशक गुजराती सा ह य प रषद, अहमदाबाद
8.गुजराती नवलकथामां पा -नि पण भाग2 -रमेश दवे
9.गुजराती कथा व -संपा.बाबु दावलपुरा-नरेश वेद
10.प नालालना कथासा ह यमां लोकजीवननुं नि - रमेश एम. वेद

अथवा

प14 ादेशिक सा ह य Elective Course-05

तावना भारतीय भाषाओं म हंद सव प है। इसलिए हंद सा ह या यन को अधिक गंभीर बनाना ज र है। भारतीय सा ह य क प रचना के लिए हंद का भारतीय संदभ सव था ासंगिक है। इस से छा के लिए भारतीय भाषाओं के सा ह य का ान अनिवाय है। इससे उनके ान एवम् सां कृतिक म अभिवृ होगी।

पा यपु तक **जनमट प ई स पेटलीकर**

अ ययन के लिए निधा रत `-

ईकाई- 1 ई र पेटलीकर का सा ह य क प रचय
गुजराती जानपद (आँचलिक) उप यास का वकासः सामा य प रचय
'जनमट प का कथानक-मू यांकन
'जनमट प एक आँचलिक उप यास के प म ।
ईकाई-2 'जनमट प के पा ।
ईकाई-3 'जनमट प उप यास क संवाद-योजना
'जनमट प म वातावरण-योजना।
ईकाई-4 'जनमट प क भाषा-शैली
'जनमट प का उ ` य
'जनमट प शीष क क साथ कता।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)
ईकाई 3 और 4 से ट प णी (चार वक प म से दो) (7×2 14 अंक)
ईकाई 3 और 4 से सं (दस वक प म से पाँच) (5×2 10 अंक)
प ठत उप यास से 14 वैक पक (हरेक के चार वक प दए जाने ह गे।) (14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1.अवा चीनगुजराती सा ह यनइेतिहास-३-४ (सा ह य रषद काशन)

2.अवा चीनगुजराती सा ह यनी वकासरेखा-१-२ -डॉ.धी भाईठाकर

3.गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधर -राधे यामशमा

4.गुजराती नवलथामां पा नि पण२ - डॉ.रमेश दवे

5.गुजराती सा ह यनइेतिहास- रमेश वेद

6.अवा चीनगुजराती सा ह यनइेतिहास-रमेश वेद

7.गुजराती नवलकथामां पा -नि पण भाम2 -रमेश दवे

8.गुजराती कथा व -संपा.बाबुदावलपुरा-नरेश वेद

+++++

प15 हंदभाषा और लि प Core Course-11

तावनसा ह यके गंभीर अ ययनके लिए भा षक यव थाका ानअनिवाय है। भाषा-वै ानिक आधार पर हंदभाषा का ऐतिहासिक वकास ,सभौगोलिक व तारभा षक व ,प व वध पतातथा हंदम क यूटसु वधाओंक जानकार एवम् देवनागर लि पके वकास,वैशि और मानक करणका ववरण हंदके छा के लिए अ यंतउपयोगी है।

अ ययनके लिए निधा रत `-

ईकाई-11.आधुनिक भारतीय आय भाषाओंका सामा य रचय

2. हं भाषा का उ मऔर वकास

3. हं क उपभाषाएँ एवम् बोलियाँ।

ईकाई-2 1. शासन यव थाऔर भाषा

2. भारत क बहुभा षकताऔर एक संपक भाषा क आव यकता

3. राजभाषा (कायालयी हं) क कृति

4. हं क यूट करण

5. भूमंडलीकरण के प रपे म हदका भ व य।

ईकाई-3. राजभाषा वषयकसां वधानिक ावधान

अ. राजभाषा- ावधान(अनु छेद३४३ से ३५१),

आ. रा पतिके आदेश (१९५२, १९५५, १९६०)

ईकाई-4 इ. राजभाषा अधिनियम १९६३ (यथा संशोधित १९६७)

ई. राजभाषा संक प(१९६८) यथानुमो दत(१९९१)

उ. राजभाषा नियम १९७६

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक मसे दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 1 और 2 से सं (दस वक मसे पाँच) (5×2 10 अंक)

तीन ईकाईय से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देने ह गे।(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. हद भाषा का इतिहास-डॉ.भोलानाथ तिवार

2. हद भाषा का उ म और वकास-उदयनारायण तिवार

3.राजभाषा हद : गत और याप-सं.इकबाल अहमद

4.मानक हद याकरण-पृ वीनाथ पांडेय

5. योजनपरक हद-सूय साद द -यो गे तापसिह

6.राजभाषा हद-कैलाशचं भा टया

7.राजभाषा का व -कैलाशचं भा टया

+++++

प16 योजनमूलक हद-1 Core Course-12

तावना- भाषा के योजनपरक आयाम का संबंध हमार सामा जक आव यकताओं और जीवन- यवहार से है और य प से कर भी जो समाज-सापे सेवा मा यम के प म यु होती है। उ र आधुनिक काल म जीवन और समाज क वभि न आव यकताओं और दायि व क पूति के लिए, रोजी-रोट के लिए वभि न यवहार ` म उपयोग क जानेवाली योजनमूलक हद के व वध आयाम का अ ययन अति आव यक है। इससे रा भाषा तथा राजभाषा का सं कार भी ढ होगा।

ईकाई-1 १. योजनमूलक हद अभि ाय और उसक प र याि

२. योजनमूलक हद : यु और उसके योगा मक `

ईकाई-2 ३. योजनमूलक हद और पा रभा षक श दावली

४. शासनिक हद और उसक श दावली

५. शासनिक प ाचार और उसके कार

ईकाई-3 सं `पण और ट पण।

ईकाई-4 अ. शासनिक पदनाम- Accountant, Advisor, Administrator, Announcer, Calculator, Chancellor, Clerk, Collector, Copyist, Editor, Enquiry Clerk, Gate Keeper, Guide, Hostess, In Charge, Inspector, Instructor, Justice, Medical Officer, Peon, Registrar, Surveyor, Translator, Typist,Worker.

ब.अनुभाग के नाम-Department Agriculture, Department Co-Operation, Department Community Development, Department Communications, Department Company Law & Insurance, Department Cottage Industries, Department Economic Affairs, Department Family Planning, Department Food, Department Iron & Steel, Department Labour and Employment, Department Light House, Department Legal Affairs, Department Meteorological, Department Port, Department Post & Telegraphs, Department Parliamentary Affairs, Department Printing & Stationery, Department Petroleum, Department Revenue, Department Sales Tax, Department statistics, Department Social Welfare, Department Tourism, Department Transport & Shipping.

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 से ट पणी (चार वक प म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 1 और 2 से सं (दस वक प म से पाँच) (5×2 10 अंक)

ईकाई 4 से 14 वैक पक (हरेक अं `जीश क्के हंदम चार वक देने
ह गे)। (14×1 14 अंक)

संदभ पु तक

1. योजनमूलक हं संरचना एवम् अनु योम दनेशगु
2. योजनमूलक हं - दनेशगु
3. योगा मकऔर योजनमूलक हद- दनेशगु
4. यावसायिकसं `षण्डॉ.अनूपचं भायाणी
5. योजनमूलक हं मा रभा षक दावलीतथा ट पण ा प्डॉ.मधु धवन
6. ामा णकआलेखन और ट प्पण .ो वराज
7. शु हं-डॉ. वजयपालसिह
8. शासनिकएवम् काया लयी हं-डॉ.राम काशएवम् डॉ. दनेशकुमार
9. काया लयी हं - डॉ. वजयपाल
10. राजभाषा हं और राजक य्म - यवहारघन याम्अ वाल

HINDI
B.A. DEGREE COURSE
5th SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -11 म यकालीन्क वता Core Course-9	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER -11 म यकालीन्क वता Core Course-9	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER- 12 हं सा ह क व वध वधाएँ Core Course-10	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER- 12 हं सा ह क व वध वधाएँ Core Course-10	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER -13 सा ह के सि ंतऔर हं आलोचना Elective Course-	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03
6	PAPER -14 ादेशिकभाषा-सा ह य Elective Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
7	PAPER -14 ादेशिकभाषा-सा ह य Elective Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
8	PAPER- 15 हंदभाषा और लि प Core Course-11	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
9	PAPER- 16 योजनमूलक हंद1 Core Course-12	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
10	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	02

Model of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of two course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=06				Each Day 4th Hour can be used for Library work//presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नमद द णुजरात व व ,सुरत

तृतीय वष बी.ए.

हंद

सेमे टर6

(2013-2014 एवम् 2014-2015 के शै क वष के लिए

प17 **र तिकालीनक वता Core Course-13**

तावनाः हंदका आ दकालीनसा ह यरवत काल को भा वतकरने म स य स मभूमिका रह है। इस काल के अ ययनके बना कसीभी काल का वा त वकमू यांकनसंभव नह है। भ काल का काला यलोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन वरलेकर आया। इसने भारत क भावना मकएकता और सां कृतिकपरंपरा को सुर त रखा है। अतः इनका अ ययनसमाज, सं कृतिऔर युग को समझने के लिए अनिवाय है।

1. **बहारसतसई**

पा यपु तक **बहारसतसई सार**-संपा.अ बकाचरणशमा- व भूषण

(काशकरंजन काशन,बांके वलास,सिट टेशनमाग, आगरा-3)

अ ययनके लिए निधा रत`-

ईकाई-1 1.र तिकालनामकरण और समय-सीमा और मुख वशेषताएँ।

2. र तिसि का यधारा क मुख वशेषताएँ।

3. बहारका सा ह यक रचय।

ईकाई-2 4. हंदसतसई परंपरा और उसम ‘ बहारसतसई’ का थान।

5. बहार एक सफल मु ककार।

6.‘ बहारसतसई’ म वरहवण न।

ईकाई-3 7. ‘ बहारसतसई’ म नीति

8. बहारक बहु ता

9. ‘ बहारसतसई’ म कृतिचि ण

ईकाई-4 10. बहारक भाषा-शैली।

11. बहारक भ -भावना।

अंक- वभाजन

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 1 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 1 और 4 से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठतक वताओंसे 14 वैक पक (हरेक के चार वक दये जाने ह गे।(14×1 14 अंक)

संदभ पु तक

1. हंद सा ह य का इतिहास. डॉ.नगे
2. हंद सा ह य का इतिहास-डॉ.ल मीसागरवा णेय
3. हंद सा ह य का आ दकाल-हजार साद वेद
4. हंद सा ह य का अतीत-१-२ - व नाथ साद म
5. हंद सा ह य का इतिहास-रामचं शु ल
6. हंद सा ह य का दूसरा इतिहास-डॉ.ब चनसिंह
7. हंद सा ह य का वै ानिक इतिहास-१-२ -डॉ.गणपतिचं गु
8.र तिकालीन सा ह य कोश- वजयपालसिंह
9. बहार :एक मू यांकन-डॉ.ह रचरणशमा
10. बहाररर ाकर-जग नाथदास र ाकर

अथवा

प17 **र तिकालीन क वता Core Course-13**

तावना : हंद का आ दकालीन सा ह य परवत काल को भा वत करने म स य स म भूमिका रह है। इस काल के अ ययन के बना कसी भी काल का वा त वक मू यांकन संभव नह है। भ काल का का य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन वर लेकर आया। इसने भारत क भावना मक एकता और सां कृतिक परंपरा को सुर त रखा है। अतः इनका अ ययन समाज, सं कृति और युग को समझने के लिए अनिवाय है।

1. रामचं चं का-केशवदास

पा यपु तक-**केशव-सुधा-संपा.डॉ. वजयपालसिंह**
(काशक-राजपाल ए ड स ज़ क मीरगेट, द ल्ली
अ ययन के लिए निधा रत`-

ईकाई-1	1.र तिकाल नामकरण और समय-सीमा और मुख वशेषताएँ।
	2. र तिब का यधारा क मुख वशेषताएँ।
	3. क व आचाय केशवदास का सा ह यक प रचय।
ईकाई-2	4.'रामचं का का का य व प कथानक।
	5.'राम चं का के मु य पा - राम और भरत।
	6.'राम चं का का भाव-प ।
ईकाई-3	7. 'राम चं का के गौण पा - सीता, ल मण और रावण।
	8. 'राम चं का म कृति चि ण।
	9. 'राम चं का म संवाद-योजना।
ईकाई-4	10. 'राम चं का क भाषा।
	11. 'राम चं का म हा य यं य।

अंक- वभाजन

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 1 और 4 से ट पण्णी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)

ईकाई 1 और 4 से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठतक्र वताओं से 14 वैक क (हरेक के चार वक देने ह गे।(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. हं सा ह का इतिहास. डॉ.नगे
2. हं सा ह का इतिहास-डॉ.ल मीसागर वा णेय
3. हं सा ह का आ दकाल-हजार साद वेद
4. हं सा ह का अतीत-१-२ - व नाथ सा
5. हं सा ह का इतिहास-रामचं शु ल
6. हं सा ह का दूसरा इतिहास-डॉ.ब चन सिह
7. हं सा ह का वै ानिक इतिहास-१-२ -डॉ.गणपतिचं गु

8.र तिकालीन सा ह कोश- वजयपाल सिह

9.भ और र तिकालीन हदमु क का य जते पाठक

10.र तिकालीन सा ह कोश- वजयपाल सिह

11. र तिकाल के तिनिधि क व रामफेर पाठ

+++++

प 18 हंदउप यास Core Course-14

तावना भारतीय भाषाओं म हंदसव प है। इसलिए हंदसा ह या यन को अधिक गंभीर बनाना ज रहै। भारतीय सा ह क परचना के लिए हंद का भारतीय संदभ सव था ासंगिक है। इस से छा के लिए भारतीय भाषाओं के सा ह का ान अनिवाय है। इससे उनके ान एवम् सां कृतिक म अभिवृ होगी।

पा यपु तक बाबा बटेसरनाथ - नागाजु न

अ यन के लिए निधा रत`-

ईकाई-1 आँचलिक उप यास श द्र प रभाषा त वऔर वशेषताएँ
'बाबा बटेसरनाथ' का कथानक-मू यांकन
'बाबा बटेसरनाथ' एक आँचलिक उप यास के प म ।

ईकाई-2 'बाबा बटेसरनाथ ' का नायक।

ईकाई-3 'बाबा बटेसरनाथ' के गौण पा
'बाबा बटेसरनाथ' म संवाद एवम् वातावरण-योजना।

ईकाई-4 'बाबा बटेसरनाथ' क भाषा-शैली
'बाबा बटेसरनाथ' का उ े य।
'बाबा बटेसरनाथ' शीष क क साथ कता।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पण्णी (चार वक मंस से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत् उप यास से सं (दस वक मंस से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत् उप यास से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देंगे ह गे।) (14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. हंद के आँचलिक उप यास-संपा.डॉ.रामदरश मि - डॉ. ानचंदगु (वाणी काशन, द ल्ली

2. हंदउप यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल काशन .लि.नई द ल्ली

3.आंचलिकता और हंदउप यास-डॉ.नगीना जैन (अ र काशन, द ल्ली

4.उप यास का व -डॉ.शशिभूषण सिंहल (आधुनिक काशन, द ल्ली-3)

5. वातं यो र हंदउप यास म कृषक-जीवन-डॉ.उ मपटेल (शांति काशन,रोहतक)

6. वातं यो र हंदउप यास का व -डॉ.मृ युंजयउपा याय

7. हंद उप यास-एक अंतया -डॉ.रामदरश मि (राजकमल काशन .लि.नई द ल्ली

8.नागाजु न-संपा.सुरेशचं यागी, आशिर काशन,सहारनपुर

9. हंदउप यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल काशन .लि.नई द ल्ली

10.बाबा नागाजु न-संपा.नरे कोहली

11. हंद उप यास-जनवाद परंपरा-संपा.कुँवरपाल सिह

12.नागाजु न का उप यास सा ह -सामसामयिक संदभ-डॉ.सुरश यादव

+++++

अथवा

प 18 हंदउप यास Core Course-14

तावना भारतीय भाषाओं म हंदसव प है। इसलिए हंदसा ह या यन को अधिक गंभीर बनाना ज रहै। भारतीय सा ह यक परचना के लिए हंदका भारतीय संदभ सव था ासंगिकहै। इस से छा के लिए भारतीय भाषाओं के सा ह य का ानअनिवाय है। इससे उनके ान एवम् सां कृतिक म अभिवृ होगी।

पा यपु तक **कोहबर क शत - केशव सादमि**

अ ययन के लिए निधा रत` -

ईकाई-1 आँचलिक उप यास श द प रभाषा, त व और वशेषताएँ

'कोहबर क शत' का कथानक-मू यांकन

'कोहबर क शत' एक आँचलिक उप यास के पम ।

ईकाई-2 'कोहबर क शत ' के मु यपा-चंदन, गुंजा, ओंकार।

ईकाई-3 'कोहबर क शत' के गौण पा -काका, वै जी,बाला,दशरथ, बल्ली आ द।

'कोहबर क शत' म संवाद एवम् वातावरण-योजना।

ईकाई-4 'कोहबर क शत' क भाषा-शैली

'कोहबर क शत' का उ ` य।

'कोहबर क शत' शीष क क साथ कता।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत उप यास से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत उप यास से 14 वैक पक (हरेक के चार वक दे ने ह गे।)

(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. हंद के आँचलिक उप यास संपा.डॉ.रामदरश मि -डॉ. ानचंद गु (वाणी काशन द ली

2. हंद उप यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल काशन .लि.नई द ली

3.आंचलिकता और हंद उप यास-डॉ.नगीना जैन (अ र काशन द ली

4.उप यास का व -डॉ.शशिभूषण सिंहल (आधुनिक काशन द ली 3)

5. वातं यो र हंद उप यास म कृषक-जीवन-डॉ.उ म पटेल (शांति काशन रोहतक)

6. वातं यो र हंद उप यास का व , डॉ.मृ युंजय उपा याय

7. हंद उप यास एक अंतया -डॉ.रामदरश मि (राजकमल काशन .लि.नई द ली

8. हंद उप यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल काशन .लि.नई द ली

+++++

प19 पा ा सा ह - सि ांत Elective Course-06

तावना कसी भी रचना क   वशि ता एवम् मू यबोध के उ ाटन के लिए का यशा और सा ह यालोचन का ान अनिवाय है। इनसे ह सा ह य क समझ वकसित हो सकती है। इससे ह वह मिलती है जसके आधार पर सा ह य के मम और मू यक परख हो सकती है। सामा जक सां कृतिक प रवेश के साथ रचना का आ वाद करने तथा रचना को उसक सम ता म समझने के लिए भारतीय का यशा का अ ययन आव यक है।

अ ययन के लिए निधा रत `-

ईकाई-1 1. सा ह य म रभाषा सा ह य और समाज

2. क वता म रभाषा क वत त व, क वता: का (बंध और गीत)

ईकाई-2 3.समालोचना: व , समालोचना: कार, आलोचक के गुण

4. उप यास म रभाषा त व और कार।

5. कहानी: प रभाषा त व और कार।

ईकाई-3 6.नाटक: प रभाषा त व और कार।

7.निबंध: प रभाषा त व और कार।

ईकाई-4 8. मुख हदआलोचकः प रचया मक ध ययनएवम् योगदान-

1. आचाय रामचं शु ल2. आचाय हजार साद वेद

3. डॉ.नंददुलारे वाजपेयी 4. डॉ.राम वलासशमा ।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक प म से दो) (7×2 14 अंक)

सभी ईकाईय से सं (दस वक प म से पाँच) (5×2 10 अंक)

सभी ईकाईय से 14 वैक पक (हरेक के चार वक प देने ह गे।(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

१. पा ा य सा ह य-चिंतन-सं.निम लाजैन

२. हंद आलोचना क बीसवीं सद -निम लाजैन

३. रस-चितन के व वधआयाम-सं.आनंद काश द त

४. भारतीय तथा पा ा य का यशा तथा हंद आलोचना-डॉ.रामचं तिवार

५. भारतीय का यशा क भूमिका-डॉ.नगे

६. रस-सि ांत-डॉ.नगे

७. पा ा य का यशा -डॉ.भगीरथ मि

८. सा ह य के मुख वाद-डॉ.राममूति पाठ

९. भारतीय एवम् पा ा य का यसि ांत-डॉ.गणपतिचं गु

१०.मा सवाद ,समाजशा ीयऔर ऐतिहासिक आलोचना-डॉ.शशिभूषण पांडेय

११.शा वादऔर व छंदतावाद:सा ह यादश और समी ा णाल -पी.वासवद ा

१२. हंद आलोचना का वकास-नंद कशोरनवल

१३.भारतीय एवम् पा ा य का यशा -डॉ. वजयपालसिंह

+++++

प20 ादेशिकसा ह य Elective Course-07

तावनाभारतीय भाषाओं म हंदसव प है। इसलिए हंदसा ह या ययनको अधिक गंभीर बनाना ज रहै। भारतीय सा ह य क प रचना के लिए हंदका भारतीय संदभ सव था ासंगिकहै। इस से छा के लिए भारतीय भाषाओं के सा ह य का ानअनिवाय है। इससे उनके ानएवम् सां कृतिक म अभिवृ होगी।

1. **नळा यान- `मानंद**

अ ययनके लिए निधा रत`-

ईकाई-1 `मानंदका सा ह य क प रचय

गुजराती आ यानकका य का व ,प वकासऔर वशेषताएँ

'नळा यान'का कथानक:मू यांकन

ईकाई-2 ‘नळा यान: एक सफल आ यानक का य

‘नळा यान म पा -योजना

ईकाई-3 ‘नळा यान म रस-योजना

‘नळा यान म संवाद-योजना

‘नळा यान के गौण-पा

ईकाई-4 ‘नळा यान क भाषा-शैली

‘नळा यान का उ े य

‘नळा यान शीष क क साथ कता।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत आ यान से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत आ यान से 14 वैक पक (हरेक के चार वक दए जाने ह गे)।

(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. ाचीन गुजराती सा ह य का इतिहास-१ (सा ह य प रषद काशन)

2.म यकालीन गुजराती सा ह य का इतिहास-२ (सा ह य प रषद काशन)

3. ेमानंद: एक समालोचना-रमेश शु ल

4.गुजराती सा ह य का इतिहास- रमेश वेद

अथवा

प20 ादेशिक सा ह य Elective Course-07

तावना भारतीय भाषाओं म हंदसव प है। इसलिए हंदसा ह य का य यन को अधिक गंभीर बनाना ज रहै। भारतीय सा ह य क प रचना के लिए हंद का भारतीय संदभ सव था ासंगिक है। इस से छा के लिए भारतीय भाषाओं के सा ह य का ान अनिवाय है। इससे उनके ान एवम् सां कृतिक म अभिवृ होगी।

1. **ओखाहरण - ेमानंद**

अ ययन के लिए निधा रत े-

ईकाई-1 ेमानंद का सा ह य क प रचय

गुजराती आ यानक का य का व , प वकास और वशेषताएँ

‘ओखाहरण’ का कथानक: मू यांकन

ईकाई-2 ‘ओखाहरण’: एक सफल आ यानक का य

‘ओखाहरण’ म पा -योजना

ईकाई-3 ‘ओखाहरण’ म रस-योजना

‘ओखाहरण’ म संवाद-योजना

‘ओखाहरण’ के गौण-पा

ईकाई-4 ‘ओखाहरण’क भाषा-शैली
‘ओखाहरण’ का उ ` य
‘ओखाहरण’ शीष क्क साथ कता।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)
ईकाई 3 और 4 से ट पण्णी (चार वक म्म से दो) (7×2 14 अंक)
प ठत्आ यान्से सं (दस वक म्म से पाँच) (5×2 10 अंक)
प ठत्आ यान्से 14 वैक पक (हरेक के चार वक ढ्ठेने ह गे)।(14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. ाचीन्गुजराती सा ह यक्क्षेतिहास-१ (सा ह त्य रषद काशन)
2.म यकालीन्गुजराती सा ह यक्क्षेतिहास-२ (सा ह त्य रषद काशन)
3. `मानंद:एक समालोचना-रमेश शु ल
4.गुजराती सा ह यक्क्षेतिहास- रमेश वेद

+++++

प21 हंद याकरण Core Course-15

तावनाभाषा के शु व प रनि तफ्क जानकार के लिए याकरणशा का ान्अ यंत आव यक्है। इसके उपयोग से ह हंदक कृतिका प रचय्मिल सकता है।

अ ययन्के लिए निधा रत `-

ईकाई-1 1. यु प एवम् रचना क से श दका वग करण
ईकाई-2 1. सं ाप्र रभाषाएवम् भेद
2. सव नामः प रभाषाएवम् भेद
ईकाई-3 1. वशेषणक्र प रभाषाएवम् कार
2. या प रभाषाएवम् कार
ईकाई-4 1. वचन एवम् कारक का प रचय।

अंक- वभाजन

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)
ईकाई 1 और 4 से ट पण्णी (चार वक म्म से दो) (7×2 14 अंक)
सभी ईकाईय से सं (दस वक म्म से पाँच) (5×2 10 अंक)
सभी ईकाईय से 14 वैक पक (हरेक के चार वक ढ्ठेने ह गे)। (14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

१. हं याकरण्पं.कामता साद्गु , नागर चा रण्णीभा, काशी
२. हं याकरणमीमांसा-काशीराम शमा
3. यावहा रकहंद याकरण्डॉ.हरदेव बाहर ,लोकभारती काशन्इलाहाबाद
4. हंद फ्रचना भाग-1-2- लोकभारती काशन्इलाहाबाद

+++++

प22 योजनमूलक हंद-2 Core Course-16

तावनाभाषा के योजनपरकआयाम का संबंध हमार सामा जकआव यकताओंऔर जीवन-यवहारसे है और य पसेलेकर भी जो समाज-सापे सेवा मा यमके पम यु होती है। उ र आधुनिक काल म जीवन और समाज क वभि आव यकताओंऔर दायि व क पूति के लिए, रोजी-रोट के लिए वभि न यवहार ` म उपयोग क जानेवाली योजनमूलक हंदके व वधआयाम का अ ययन अति आव यकहै। इससे रा भाषातथा राजभाषा का सं काभी द्धहोगा।

अ ययनके लिए निधा रत `-

ईकाई-1 हं का वै ानिकएवम् तकनीक प
वै ानिक,तकनीक एवम् ौ ोगिक ` म हदा

ईकाई-2 हं अनु योगम अनुवाद क भूमिका।
अनुवाद क अवधारणा, उसका मह वऔर वभि न सि ांत।

ईकाई-3 हं म मी डयालेखन
जनसंचार-मा यमअभि ाय, व पऔर व तार
जनसंचार-मा यमके कार

ईकाई-4 समाचार-लेखन और हं
संवाद-लेखन और हं
रे डयोलेखन और हं
व ापनलेखन।

अंक- वभाजन

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)
ईकाई 1 और 4 से ट पणी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)
सभी ईकाईय से सं (दस क पम से पाँच) (5×2 10 अंक)
सभी ईकाईय से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देनेह गे) (14×1 14 अंक)

संदभ-पु तक

1. अनुवाद-बोध - डॉ.गाग गु
2. अनुवाद- व ान-डॉ.भोलानाथ तिवार
3. जनसंचारः व वधआयाम- जमोहनगु
4. मी डयाऔर सा ह य-सुधीश पचौर
5. यावहा रकअनुवाद- डॉ.एन.ई. व नाथअयर
6. योजनपरक हं - .सूय साद एवम् डॉ.योगे तापसिह
7. योजनमूलक हं : व वधआयाम- माया सिह
8. योजनमूलक हं का अ ययन-डॉ.सुशीला गु ा

+++++

HINDI
B.A. DEGREE COURSE
6th SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -17 म यकालीन्क वता Core Course-13	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER -17 म यकालीन्क वता Core Course-13	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER- 18 ह्दं उप यास Core Course-14	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER- 18 ह्दं उप यास Core Course-14	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER -19 सा ह येके सि ांतऔर ह्दं आलोचना Elective Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03
6	PAPER -20 ादेशिकभाषा-सा ह य Elective Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
7	PAPER -20 ादेशिकभाषा-सा ह य Elective Course-3	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
8	PAPER- 21 हंद याकरण Core Course-15	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
9	PAPER- 22 योजनमूलक हंद1 Core Course-16	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
6	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-2	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	02

Model of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of two course in each				Each Day 4th Hour can
Tuesday	Semester.				be used for
Wednes	Three Hours for each course per week				Library work//presentation
Thursday	Total teaching hours per week=06				ect.
Friday					
Saturday	Self Study Course				